A ceremony that was held in 1970 in order to draw the attention of the world to the various problems being caused to the earth due to modernization has turned into one of the biggest annual international event over the years. This special day is observed in April every year to remind us to share a responsibility to protect our planet. World Earth Day was celebrated in DAV Sahibabad's junior wing on 22.4.10. Tiny tots enthusiastically participated in many activities organized for them. Students took a pledge to plant more trees, reduce waste, use recycled products, go organic, conserve electricity, reuse shopping bag and last but not the least prevent pollution. Let's not forget Earth Day is a perfect time to express, initiate and put in practice the ideas related to protecting the environment.

*** अभिव्यक्ति ***

शिक्षा है : जीने की कला

एक उपनिषद् की कथा जिसे ओशो अक्सर सुनाते थे : एक गुरूकुल से तीन युवक शिक्षा लेकर वापस लौट रहे थे। शिक्षा पूर्ण हो चुकी थी परन्तु परीक्षा नहीं हुई, वे हैरान थे कि परीक्षा क्यों नहीं ली गई ? आचार्य ने ऐसे ही जाने की अनुमति कैसे दे दी। वे गुरूकुल से थोड़ी ही दूर गए होंगे कि सूर्य ढलने लगा। एक झाड़ी के पास पगडंडी पर बहुत से कांटे पड़े थे।

पहला युवक छलांग लगा कर कांटो को पार कर गया। दूसरा युवक पगडंडी छोड़ किनारे से निकल गया परन्तु तीसरा रूक गया और कांटे बीन कर झाड़ी में डालने लगा, दोनों मित्रों ने कहा कि यह क्या करते हो, रात बढ़ रही है और हमें शीघ्र ही वन के पार हो जाना है। वह बोला इसीलिए इन्हें हटा रहा हूँ कि रात उतरने को है, हमारे बाद जो भी इस राह पर आएगा उसे कांटे दिखाई नहीं पड़ेगें। वे यह बात कर ही रहे थे कि अचानक आचार्य झाड़ी से बाहर आए जो वहीं छिप कर वार्तालाप सुन रहे थे - उन्होंने तीसरे को कहा, मेरे बेटे, तू जा ! तुमने शिक्षा प्राप्त कर ली है और शेष दो युवकों को लेकर वे गुरूकुल लौट गए, क्योंकि उनकी शिक्षा अभी पूर्ण नहीं हुई थी।

अतः जीवन और शिक्षण में सामंजस्य ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। मात्र पुस्तकीय ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान नहीं है। सीखना एक अंतहीन कला है क्योंकि गति ही जीवन है। अतः बुद्धिमान एवं संवेदनशील व्यक्ति जब तक इस लोक में है सीख रहा है और उसी से उसका जीवन-प्रसून विकसित हो रहा है। मूल्यांकन का मापदण्ड मात्र परीक्षा एवं अंक ही नहीं है अनेक ऐसे माध्यम है जो विद्यार्थी को सर्वश्रेष्ठ बनाते है तथा पूर्ण व्यक्तित्व प्रदान कर जीने की कला सिखाते हैं।

रेशम (12वीं-जी)

प्रेरणा

आओ साथी वृक्ष लगाएँ
सूखी धरती हरी बनाएँ।
वृक्ष हमारे जीवनदाता
यही हमारे भाग्यविधाता।
वृक्षों से वर्षा आती है
वृक्षों से बदली छाती है।
उजड़े उपवन पुनः सजाएँ
आओ साथी वृक्ष लगाएँ।
वृक्षों ने पशुओं को पाला
वृक्षों ने ईंधन दे डाला।
औषधि का भडांर वृक्ष हैं
ममता का आधार वृक्ष हैं।
वृक्षों में सबकी खुशहाली
मन को सुख देती हरियाली।
जन-जीवन को सुखद बनाएँ
आओ साथी वृक्ष लगाएँ।

संभावना (12वीं-जी)